International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

राजस्थान की स्थापत्य कला का पर्यटन के क्षेत्र में योगदान

Mahendar Kumar,

Associate Professor, Govt College Bayana

राजस्थान कलाओं से परिपूर्ण एक उन्नत सभ्यता एवं संस्कृति का प्रदेश है। यहाँ का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनेकों ध्वनियाँ का गुजायमान है। यहाँ का छोटे से छोटा ग्राम्प अंचल भी कोई कौशल से अपने अंतस को रोशन कर रहें है। राजस्थान के किले, दुर्ग, राजप्रसाद, देवप्रसाद कुएँ बावडियों दूर तक पसरे रेत के स्वर्णिम धोरे सभी कुछ अद्‌भुत एवमं अनुठें है।

राजस्थान के कलाकार ही नही अपितु राजा महाराजा भी स्वयं कला मे निपुण एवं संस्कृति के पोषक रहे है। मेवाड के महाराणा कुम्भा वास्तु व स्थापत्य के भर्मज्ञ एवंम कला पारखी रहे है। कुम्भा कालीन चितौडगढ व अचलगढ दुर्ग तत्कालीन स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण है। इसके अतिरिक्त राजस्थान के राजप्रसाद, देवप्रसाद, छतरियाँ, बावडियाँ, हवेलियों का स्थापत्य निवेश में महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय स्थापत्य के तत्व विकसित तथा समृद्ध परिणाम में राजस्थान में पाये जाते है, क्योंकि स्थापत्य को यहाँ राजकीय तथा व्यक्तिगत रुप से सतत आश्रय मिलता रहा है। यहाँ स्थापत्य की अभिव्यक्ति, गावों, नगरों, मन्दिरों, राजभवनों, दुर्गो, जलाशयों, उधानों तथा समाधियों द्वारा प्रमाणित होती है।

(1) बस्तियाँ और स्थापत्य –

राजस्थान के स्थापत्य का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना मानव इतिहास का युग। प्रमाणों से ज्ञात हैं कि यहाँ का आदि निवासी भारत के आदि – निवासी की भाँति पूर्व– प्रस्तर युगीन मनुष्य था। यह निरा बर्बर था एवं नदियों के किनारे वृक्षों के नीचे और पहाडों की उपत्यकाओं तथा कन्दराओं में रहकर जीवन व्यतीत करता था। सरस्वती, चम्बल, बेडच, बनास, गम्भीरी, आहण तथा लूनी नदियों तथा अरावली की श्रेणियों के किनारों और गडढों में जमी हुई परते तथा उनके आसपास के क्षेत्रों मे मिलने वाले पत्थरों के औजार इस बात को प्रमाणित करते हैं कि यहाँ का आदिम मानव इन नदियों के तटों और अरावली पर्वत की उपत्यकाओं मे कम से कम एक लाख वर्ष पूर्व रहता था कालान्तर मे इस पूर्व प्रस्तरकालीन मानव ने उतर–प्रस्तरकालीन युग मे प्रवेश किया। इस समय तक वह भौडे–औजारों के बजाय पैने तथा चमकीले औजार बनाना सीख चुका था। मिटटी के बर्तनों का प्रयोग घास फूस की झोंपडियों मे रहने की विधि वह जान गया था। जिसे वह स्वयं बनाता था। इससे प्रागैतिहासिक स्थापत्य कला का जन्म होता है। आज भी राजस्थान के घने जगलों मे रेतीले और बीहड पहाडी भागो मे रहने वाले आदिम जाति के समुदाय ऐसे स्थापत्य का प्रयोग करते है। कालीबंगा की सभ्यता में चौडी सडके, सार्वजनिक नालियाँ दुर्ग का प्रकार, गोल कुऐं क्रमिक अन्तर वाली नालियाँ और गलियाँ छोटे मोटे सटे हुए मकान आदि उस युग के शालीन स्थापत्य के साथी है। दीवारें कच्ची या भौंडी सूर्य–तपी ईटो की

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

होती थी सडके विशेष प्रकार के गोल मिटटी के ढेलो से कडी की जाती थी मकानो के दरवाजे छोटे होते थे और पानी निकलने की चारो ओर व्यवस्था रहती थी। खुदाई से उपलब्ध सामग्रियों मिटटी के चिकने विचित्र बर्तन सुन्दर रेखाचित्रों वाली मुहरे खिलौने चूडियाँ आदि ने प्रमाणित कर दिया है कि सरस्वती तथा द्धषद्वती सभ्यता के नागरिक मोहनजोदडो तथा प्राचीन यूनानियो की भाँति कला के प्रति जागरुक थे और उसमें पूर्ण रुचि रखते थे।

(2) किलो का स्थापत्यः– राजस्थान में महाराष्ट की भाँति पग–पग पर किले मिलते है। यदि हम इस राज्य के एक भाग से दूसरे भाग मे पदयात्रा करें तो हमें लगभग 10 मील के बाद कोई न कोई किला अवश्य मिल जायेगा। चाहे राजा हो या सामन्त वह किले को अपनी निधि के रूप मे समझता था। राजा अपने निवास के लिए, सुरक्षा के लिए सामग्री के लिए, पशुधन बचाने के लिए और सम्पति को छिपाने के लिए किले बनाते थे। प्राचीन लेखकों, मण्डन तथा सदाशिव ने किलो को राज्य का अनिवार्य अंग बताया है। राजा की भाँति सामन्तो ने भी अपने अधिकार क्षेत्र में किले उपर्युक्त विचारो को ध्यान मे रखते हुए बनाये। राजाओं तथा सामन्तो एवं उनके अधिकारियो ने भी अपने प्रभाव क्षेत्र मे किले में रहकर शासन करने की एक परिपाटी बनायें रखी। किले मे रहना या किले की अधिक सख्यां अपने अधिकार मे रखना एक महत्व की बात मानी जाती थी।

राजस्थान मे किले के स्थापत्य के विकास का प्रथम आधार कालीबंगा की खुदाई में मिलता है। उत्तर और दक्षिणी धूल के ढेरों को खोदने से स्पष्ट है कि उत्तरी ढेर से खोदा हुआ भाग सम्भवतः किले का भाग रहा हो। इसकी पुष्टि के लिए उसके चारों ओर 8 से 10 फुट चौडी दीवारों के अवशेष है। इस दीवार के भीतरी भाग के मकानों के अवशेष एक इकाई के रुप मे है जो दक्षिणी धूल के ढेर से भिन्न है। इस प्रकार प्राचीनकाल मे दुर्गो की व्यवस्था थी।

तेरहवीं सदी से तो आगे के युग तक किले बनाने की परम्परा एक नया मोड लेती है। इस काल में ऊँची–ऊँची पहाडियाँ जो ऊपर से चौडी हो और जिनमें खेती तथा सिंचाई के साधन हों किले बनाने के उपयोग मे लायी जाने लगी या यहाँ प्राचीनकाल के जो किले बने हुऐ थे उन्हें फिर से ढंग से बना दिया गया। चितौड, आबू कुम्भलगढ, माण्डलगढ आदि स्थानों के किले पुराने काल के थे, उनको फिर से मध्ययुगीन युद्ध शैली को ध्यान मे रखकर बना दिया गया। उदाहरणार्थ, महाराणा कुम्भा ने चितौड किले को प्राचीर द्वारो की श्रृखला तथा बुर्जो से अधिक सुद्रढ बनाया। कुम्भलगढ के किले की पहाडी श्रृंखलाओं से घेरे हुए स्थान को प्राकार द्वारा सुरक्षित किया।

किले के भीतर ऊँचे से ऊँचे भाग का प्रयोग राजप्रसाद के लिए तथा नीचे से नीचे भाग को जलाशयों के लिए और समतल भाग को खेती के लिए रखा गया। बची हुई भूमि का प्रयोग मन्दिरो तथा मकानों के निर्माण में किया गया। किले के चारो ओर दीवारें चौडी और बडे आकार की बनायी गयी जिन पर कई

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

घोडे एक साथ चल सकते थे। प्राकार की दीवार का ढाल इस तरह रखा गया कि उस पर सरलता से चढना कठिन था। कहीं–कहीं दीवारों के नीचे गहरे पहाडी गड्ढें ऐसी स्थिति मे रखे गये कि हमलावर फौजों का दुर्ग मे घुसना कठिन था। अचलगढ तथा जोधपुर के दुर्ग के लिए प्राकृतिक जलाशय नही होने से तथा चौरस भूमि के अभाव के कारण टंकियाँ बनायी गयी जिनमें बरसात का पानी इकट्ठा कर लिया जाता था और अन्न संग्रह के लिए कोठे भी बनाये गये जो आक्रमण के समय उपयोगी हो सके। ठीक इस गढ के नीचे जलाशय और खेती के उपयोग की भूमि रखी गयी। बीकानेर का किला रेगिस्तान मे बनने वाले किलो मे सबसे श्रेष्ठ किला हैं। युद्धकाल मे किले के फाटकों को बन्द करके लडने के लिए यह किला बडा उपयोगी है।

(3) राजप्रसादो का स्थापत्यः– राजस्थान के स्थापत्य में राज प्रासादों का एक विशिष्ट रुप दिखाई देता है। नगर निर्माण में अथवा दुर्ग निर्माण मे राज प्रसाद का होना अनिवार्य माना जाता था। प्रसिद्ध शिल्पी मण्डन ने राजप्रासाद बनाने का स्थान या तो नगर के बीच मे या नगर के एक कोने में ऊँचे स्थान पर ठीक माना है। राजप्रासादो के निर्माण मे जो भव्यता को प्रधानता दी गयी वह राजपूत शासकों बढती हुई शक्ति को प्रदर्षित करती हैं। राज–प्रासादो मे जनानी ड्योढी एवं मर्दानी ड्योढी, अनिवार्यतः बनायी जाती थी तथा दोनों को सुगम मार्ग से जोडा जाता था। मर्दानी ड्योढी मे दरबार लगाने आम जनता तथा दरबारियो से मिलने, राजकुमारों के निवास आदि की व्यवस्था होती थी। जनानी ढ्योढी मे राजपरिवार की महिलाओं के निवास व रसोडे आदि की व्यवस्था होती थी। राजप्रासादो के इन समस्त अंगो को जोडकर एक पूर्ण इकाई का रुप दिया जाता था तथा दुर्ग–स्थापत्य के समान बुर्ज आदि भी बनवाये जाते थे। राजपूत शासको के राज–प्रासादों के स्थापत्य मे बहुत साम्य पाया जाता है।

मुगलों से सम्पर्क स्थापित होने के बाद राज–प्रासादो को चमक–दमक वाले बनाने का क्रम आरम्भ हो गया। उनमें फव्वारे, छोटे उधान, पतले खम्भे और उन पर बेल–बूटों की नक्काशी तथा संगमरमर का प्रयोग होने लगा। राजप्रासादों का अलंकरण विशेष रुप से आरम्भ हुआ। बारीक खुदाई, नक्काशी, अलंकृत छज्जे, गवाक्ष आदि राजस्थानीय राजप्रासादों की अपनी विशेषता रही है। उदयपुर के अमरसिंह महल, पिछोला झील में स्थित जगनिवास और जगमन्दिर, जोधपुर दुर्ग मे स्थित फूल महल, आमेर व जयपुर मे दीवाने आम व दीवाने खास, बीकानेर मे रंगमहल, शीशमहल व अनूप महल आदि में राजपूत स्थापत्य की प्रधानता होते हुए भी सजावट में मुगल शैली अपनायी गयी है। ज्यों–ज्यों राजपूत शासक एवं सामन्त मुगल दरबार में अधिकाधिक जाने लगे, उनमें मुगलों के वैभव के अनुरुप स्थापत्य मे रूचि बढने लगी। मुगलों के पतन के बाद मुगल आश्रित अनेक शिल्पकारो के परिवारों को राजपूत शासको ने आश्रय दिया। इनके द्वारा न केवल शासकों के महलो के स्थापत्य मे अपितु सामन्तों के राज–प्रासादो मे भी मुगल शैली प्रगति करने लगी।

(4) स्मारकों की स्थापत्य कलाः– राजपूत शासकों, सामन्तो, श्रेष्ठियों संतो एव धनी लागो की स्मृति मे स्मारक बनाने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आयी थी। मध्ययुगीन राजपूत स्मारको स्तम्भों पर वीर योद्धा एवं उसके आयुधों का अंकन किया जाता था। इन्हे देवली भी कहते थे। राजपूत योद्धा प्रायः घोडे पर सवार होता था और उसके निकट सतियों का अंकन किया जाता था। मुगलों से सम्पर्क होने के बाद इन स्मारकों पर मुगल शैली का प्रभाव दिखने लगा। 17वीं से 19वीं शताब्दी तक निर्मित छतरिया प्रायः एक वर्गाकार चबूतरे पर बनी हुई है जिन पर एक छोटा वर्गाकार अथवा गोलाकार चबूतरा रहता है और उस पर चार छः आठ और बारह खम्भों पर आधारित गोलाकार गुम्बद बना रहता है। इनके खम्भे विभिन्न कोणीय अथवा गोलाकृतियों में बने हुए होते है जिन्हें विभिन्न रेखाकृतियों द्वारा अंलकृत किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुम्बदो की छतें प्रायःसादी है। कुछ छतरियो मे शिवलिंग स्थापित है। साथ ही सम्बन्धित राजा, सामंत या योद्धा की आकृति से युक्त पाषाण पट्टियां और उस पर लेख भी उत्कीर्ण कराए गए है। मध्यकालीन छतरियों मे बीकानेर मे बीकाजी की छतरी और रायसिंह की छतरी जोधपुर में मण्डोर उधान मे स्थित राव मालदेव की छतरी और अजीतसिंह की छतरी तथा उदयपुर के आहड ग्राम मे स्थित अमरसिंह और कर्णसिंह की छतरियां विशेष उल्लेखनीय है। नागौर जिले के ताऊसर गांव मे अप्याजी सिंधिया की छतरी मे शिवलिंग स्थापित है मण्डोर मे स्थित स्मारक मंदिरो की आकृतियों में बने है, इन्हें देवल कहा जाता है।

(5) मन्दिरों की स्थापत्य कलाः— राजस्थान प्रान्त के सिरोहीं जिले के मांउट आबू पर्वत पर देलवाडा के जैन मन्दिरो का एक समूह स्थित है जिसमें पाँच मन्दिर है। इनमें से विमल वसहि तथा लूणवसहि प्रमुख है। ये दोनो मन्दिर एक ही ढंग से निर्मित है जो पहाड के नीचे वाले भाग में स्थित झाली बाव से लाकर लगाये गये सफेद संगमरमर से बनाये गये है। **विमलवसहिः** आबू पर्वत पर स्थित देलवाडा के ऋषभ देव जैन मन्दिर को कर्नल टॉड ने भारत के समस्त मन्दिरों मे उत्कृष्ट माना है टॉड ने लिखा है 'ताजमहल को छोडकर कोई भी इमारत इस मन्दिर की समता नही कर सकती। विक्रम संवत् 1031 मे आबू के दण्डनायक विमलशाह द्वारा बनवाये जाने के कारण इसे विमल वसहि' कहते है। विमलशाह अन्हिलवाडा का व्यापारी था जिसे परमार राजा धुंधक ने आबू का दण्डनायक नियुक्त किया था। शताब्दियां व्यतीत हो जाने के उपरांत भी इन मन्दिरो के कलात्मक वैभव की महक ताजा बनी हुई है। मुख्य मन्दिर के चारो और बावन जिनालय है तथा दायीं ओर के विशाल कक्ष में विमलशाह की कुलदेवी अम्बा माता का मन्दिर है। मन्दिर के सामने विमलशाह की अश्वारूढ मूर्ति स्थापित है जिसके आस—पास संगमरमर के 12 हाथी बने हुए है।इसे हस्तिशाला भी कहते है। हस्तिशाला के बाहर सिरोही के शासक लूणकर्ण देवडा के वि.सं— 1372 एवं 1373 के दो शिलालेख अंकित है। सम्पूर्ण मन्दिर श्वेत संगमरमर से निर्मित है। मण्डपों, स्तम्भों, छतरियों तथा वेदियो के निर्माण मे श्वेत पत्थर पर इतनी बारीक एवं भव्य खुदाई की गई है जो अन्यत्र दुर्लभ है। मण्डप गोल चौकोर, गुम्बदकार तथा पिरामिडाकार आदि ज्यामितियीं आकृतियों में उत्कीर्ण किये गये है।

लूणवसहि :— विमलवसहि के पास ही स्थित नेमिनाथ मन्दिर भी विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का बना हुआ है। इसका निर्माण चौलुक्य राजा वीर धवल के महामंत्री वस्तुपाल एवं तेजपाल ने वि.सं.1287 में करवाया था। इसमें मुख्य मन्दिर, सभा मण्डप, जिनालय तथा हस्तिशाला हैं। मुख्य मन्दिर के द्वार के दोनो ओर दो ताक है जिन्हे देवराणी—जेठाणी का गवाक्ष कहते है। मन्दिर का मुख्य शिल्पी शोभनदेव था। चार हजार फुट से भी ऊंची पहाडी पर संगमरमर के देवालयों का यह जगमगाता हुआ संसार धरती पर एक आश्चर्य ही प्रतीत होता है।बाहर से इन मन्दिरो की बनावट सादी है किन्तु भीतरी भाग में स्तंम्भों, छतो, मण्डपों एवं द्वारों आदि की लक्षणकला अनुपम है।

भीमा□ाह मन्दिर :— यह मन्दिर विक्रम की पन्द्रहवी शताब्दी मे भीमाशाह ने बनवाया था। जैन तीर्थकर आदिनाथ की 108 मन की पीतल प्रतिमा के कारण इस मन्दिर को 'पितलहार' भी कहते है।

चौमुखा पा□र्वनाथ :— यह तीन मंजिला है तथा इसे सिलावटो का मन्दिर भी कहते है। इसमें दो कलात्मक तोरण, खड्गासन प्रतिमायें यक्षों एवं देवी—देवताओं की मूर्तिया विधमान है। गंभारे के बाहर चतुर्दिश कोरणी है।

महावीर स्वामी मन्दिर :— मन्दिर समूह का पांचवा मंदिर महावीर स्वामी को समर्पित है। इसकी दीवारों एवं गुम्बद मे प्राचीन चित्रकारी विधमान है। इसके अलावा राजस्थान के जोधपुर जिले के ओसियां गाँव से प्रतिहार कालीन (आठवीं से दसवीं शती) मन्दिर समूह के अवशेष मिले है। रणकपुर के जैन मन्दिर,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 15 Issue 01, January 2025,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कुम्भलगढ के नीलकण्ठ मन्दिर, एकलिंग जी मन्दिर रणकपुर मन्दिर आदि के चारो ओर ऊँची दीवारे, बडे दरवाजे तथा बुर्ज आदि बनाकर उन्हे दुर्ग जैसा स्वरुप दिया गया है।

कीर्ति स्तम्भ :– कुम्भा का जय स्तम्भ जो शिलालेखो मे कीर्ति स्तम्भ के नाम से विरुपात है चितौड दुर्ग का स्थापत्य और उत्कीर्ण कला का प्रमुख प्रतीक है। यह हमारे देश का एक ही स्तम्भ है जो भीतर और बाहर मूर्तियों से लदा पडा है। इसकी प्रतिष्ठा वि•सं• 1505 माघ कृष्णा 10 को हुई थी और उसका प्रारम्भ अनुमानतः 1497 ई. के लगभग हुआ था। यह स्तम्भ मालवा के सुल्तान मोहम्मद को परास्त करने की प्रसन्नता के उपलक्ष्य में इस स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा ने करवाया था। यह स्तम्भ 12 फुट ऊँचे और 2 फुट चौडे चौकोर चबूतरे पर स्थित है। इसकी चौडाई 30 फुट और लम्बाई 122 फुट है। इसमे कुल 9 मंजिलें है।नीचे की मजिल और ऊपर की मंजिलें चौडी है और बीच मे कुछ संकरी है। इस स्तम्भ के मध्य में से तथा भीतर ही भीतर बाजु से ऊपर तक सीढियाँ चली गयी है। प्रत्येक मंजिल व झरोको के होने से इसमें प्रायः प्रकाश की कमी नही रहती। इतने विशाल कीर्ति स्तम्भ के बनने मे कई वर्ष लग गये, क्योकि सं• 1499 से लेकर 1517 तक इसमें छोटे–मोटे कई शिलालेख लगे हुए हैं। जो इसके कार्य के एक लम्बे समय तक चलते रहने के साक्षी है।

जला□यों का स्थापत्यः– प्राचीन ग्रन्थों मे नगर हो या गाँव जलाशय का होना आवश्यक बताया गया है। कालीबंगा, गिलूंड, आहड आदि पुरानी बस्तियों के पास मे नदियां रही है। यही कारण है कि नदियों के समीप से संस्कृति पनपने की सुविधा रही है। आमेर की बस्ती के पास जलाशयों का जिक्र मिलता है। जो उस कस्बे के लिए बडे उपयोगी थे। जैसलमेर का कोशिकराम तथा सूरसागर, जोधपुर के रानीसर, अभयसागर, बालसमंद तथा गुलाबसर, बीकानेर के सूरसागर, अनूपसागर गोगाताल, नवलखताल, सरुपदेसर, आचार्य कूप, नाथूसर पीरकुण्ड, सीशोलाव तथा हरसोलाव का वर्णन मिलता है। इनके ऊपरी भाग में छत्रियाँ बनी रहती है और सीढियाँ चारो ओर से या एक ओर से बनी रहती हैं जो सभी भागो से या एक भाग से नीचे तक पहुँच जाती है। इनका उपयोग नहाने पानी भरने तथा कहीं–कहीं सिंचाई के काम में भी किया गया है। ऐसे जलाशयों को मुगल ढंग से भी बनवाया जाता था। जिनमें बारादरियाँ इनके साथ बनवा दी जाती थी जो ग्रीष्म ऋतु में सुख–शयन के काम में ली जाती थी। तारचन्द की बाबडी इसी प्रकार के जलाशयों का नमूना है।

उद्यानों की स्थापत्य कलाः– प्राचीन स्थापत्य में बागों का बडा महत्व है। नगरों की शोभा उद्यानों से बढाई जाती थी जिनमें फूल और फलों के वृक्ष लगाये जाते थे। अजमेर के वर्णन में बाग का वर्णन हसन निजामी ने किया है। जिनमें नगर की तुलना स्वर्ग से की गई है। राणा मोकल, कुम्भा, मानसिंह, राजसिंह, जसवन्त सिंह, मिर्जा राजा जयसिंह, सूरसिंह, आदि शासकों ने बागान लगाये जिनमें अनेक प्रकार के फल फूल लगाये जाते थे। इन बागों में मुगल कालीन शैली की प्रधानता दिखाई देती है। इन्हें चारों ओर दीवारों से सुरक्षित रखा जाता था जिनमें पानी की नालियां, फब्बारे, बारादरियां, फूलों के तस्ते आदि मुख्य है।

(i) शेखावाटी क्षेत्र के भिति चित्र समन्दर सिंह राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर।

(ii) राजस्थान का इतिहास डॉ गोपीनाथ शर्मा।

(iii) पी. टी. एल. लोगन स्टोन एज इन इण्डियाः एच. डी. सांकलिया बिगनिग ऑफ सिविलाइजेशन इन राजस्थान

सेमीनार रिर्पोट उदयपुर 1962 पृ. 1–2 ।

(iv) राजबल्लभ, सर्ग 4: राजविनोद पृ. 52–54 ।

(v) गोएट्ज आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट पृ. 67–70 ।

(vi) गोपीनाथ शर्मा सोशल लाइफ इन मेडीवल राजस्थान पृ. 69–72 ।

(vii) ब्राउन इण्डियन आर्किटेक्चर अध्याय राजप्रसाद ।

(viii) भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, डॉ. मोहनलाल गुप्ता पृष्ठ 536।

(ix) राजपूताना म्यूजियम रिपोर्ट 1921 ।

(x) मार्ग राजस्थानी स्कल्पचर्स पृ. 30, 37, 40, 45 आदि।

(xi) कीर्ति स्तम्भ शिलालेख हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड ईस्टर्न आर्किटेक्चर पृ. 253 टॉड, एनल्स भाग 2 पृ. 761।

(xii) भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास डॉ मोहनलाल गुप्ता पृ. 524, 525।

(xiii) राजस्थान का इतिहास डॉ गोपीनाथ शर्मा।

(xiv) भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास डॉ मोहनलाल गुप्ता पृ. 526, 527।

(xv) राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास डॉ गोपीनाथ शर्मा।

(xvi) कला एवं संस्कृति ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य डॉ. गीता शर्मा, डॉ शोभा सिंह पृ. 82, 83।